धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

दिसम्बर - 2010

देवात्मा अंक

* भगवान देवात्मा के देवरूप पर चिन्तन
* भगवान देवात्मा का रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध
* भगवान देवात्मा का परमावश्यक और जीवन दायक सम्बन्ध
* भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का मनुष्यात्माओं मे अनुपम कार्य

पृष्ट 19 का बाकी

जी जो मिडल पास करके भगवान देवात्मा के श्री चरणों मे आए थे, एक बहुत बड़े स्तर के लेखक बन गए। कई कर्मचारियों और सेवकों के जो उर्दू में जीवन चरित्र वर्तमान हैं, उन मे से बहुत बड़ी संख्या के वही लेखक हैं और वह वर्षो तक एडीटर रहे हैं। मुझ तुच्छ पर भी इस पहलू में बहुत बड़ा उपकार हुआ है, जिस का मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। कई छोटे मोटे पैम्फ़लिट छोड़कर मैं प्राय: 17 वर्ष से 'विज्ञान मूलक धर्म का एडीटर हूं। और पूजनीय भगवान का अंग्रेज़ी में चरित लिखने का अधिकार पा चुका हूं, जो प्राय: 800 पृष्ट का बड़ा ग्रन्थ है। और उर्दू हिन्दी और अंग्रेज़ी में सैकड़ों लेख लिखने का अधिकार पा चुका हूं। और मैं अपने सामने भगवान देवात्मा की ज्योति में इतना खुला हुआ वसीह मैदान देखता हूं, कि मैं यह अनुभव करता हूं, कि इस ज्योति में रहते हुए मैं हज़ारों लेख लिख सकता हूं और जो सब भगवान देवात्मा के देवरूप और उन की शिक्षा की महिमा के विषय में हों। मेरे साथ पढ़े हुए कालेज के ग्रेजूएट में से एक भी ऐसा जन मालूम नहीं होता, कि जिस के जीवन से इतना काम निकला हो।

(8) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने अच्छी नौकरी और आगे की बहुत चमकदार उम्मीदों को लात मार कर भगवान देवात्मा के जीवन व्रत की सिद्धि में काम करने के लिए अपना सारा जीवन भेट कर दिया। उस समय वह नौजवान थे, और उन्हों ने सारी उमर भगवान देवात्मा के जीवन व्रत की सिद्धि के कार्य में सफ़ल की। श्रीमान भाई मोहन देव जी 130) रूपए की नौकरी को छोड़कर अपनी जन्म भूमि और मित्रों को त्याग करके 29 वर्ष की भरी जवानी में भगवान देवात्मा के कार्य में लग गए, वह प्राय: 59 साल की आयु में गुज़रे। उन्हों ने अपने जीवन के 40 वर्ष पूरी वफ़ादारी के साथ भगवान देवात्मा के कार्य में व्यतीत किए। डाक्टर कुमारी प्रेम देवी जी अपनी शादी और अन्य नाना प्रकार की उम्मेदों का त्याग करके भगवान देवात्मा के कार्य में लग गंई। और जब तक जीती रहीं, भगवान देवात्मा की महिमा को पूरी वफ़ादारी के साथ फैलाती रहीं और अधिकारी स्त्री पुरूषों तक उन का महा दान पंहुचाती रहीं। औरों को छोड़कर श्रीमान भाई अमर सिंह जी का दृष्टान्त हमारे सामने है, उन्हों ने 18 साल की उमर में अपना जीवन भगवान देवात्मा के चरणों में अर्पण किया था उन्होंने 60 वर्ष से अधिक मिशन की सेवा की।

अब यह नाना प्रकार के सुन्दर फल जो भगवान देवात्मा के देव प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं, उन को हम स्मरण करें और जहां एक ओर पाए हुए उपकारों के लिए आप धन्य धन्य हों, वहां दूसरी तरफ़ औरों तक इस शुभ सम्वाद को पहुंचा कर उन का आत्मिक कल्याण करने के योग्य हों।

पी०वी०कनल

धर्म जीवन

खण्ड 23 अंक 12

दिसम्बर - 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

भगवान देवात्मा के देवरूप पर चिन्तन

प्रत्येक मनुष्य की तकदीर का फैसला दो बातों से हो जाता है, एक उस को अपने माता पिता से क्या आत्मिक पूंजी मिली है, और दूसरे उस ने किन हालात में रहकर जीवन व्यतीत किया है? इन दोनों बातों में जन्मजात योग्यता या आत्मिक पूंजी अधिक ध्यान देने के योग्य वस्तु है, क्योंकि अनुकूल और प्रतिकूल हालात किसी जन की विरसे में मिली हुई आत्मिक पूंजी पर ही कार्य्य करते हैं। मैं एक बार अपने वकील दोस्त के यहां शादी पर गया, वहां मैंने 30 साल का एक नौजवान देखा, जिस का सिर बहुत छोटा था और इधर उधर हिलता था। मैंने एक और नौजवान से पूछा, कि यह लड़का कौन है? उस ने बताया, कि यह मेरा भाई है, बेचारा जन्म से ही ऐसा सिर लेकर पैदा हुआ है। यह कभी साधारण मनुष्यों की सी होश की बातें भी नहीं करता और ऐसा करना सीख भी नहीं सका। यहां तक कि बोलना भी नहीं सीख सका। यह केवल इशारों से ही बोलता है। बाक़ी इतनी होश है, कि अपने खाने पीने की और अन्य ज़रूरतें आप ही पूरी कर लेता है। इस के छोटे भाई ग्रैजूएट बन गए, परन्तु यह "ऊल जलूल" ही रहा। उसकी जन्मजात आत्मिक पूंजी ने ही उस को सदा के लिए एक महा अबोधी अवस्था में बन्द और लाचार कर दिया। ओह! नेचर के नियमों का कितना भारी दण्ड!!

कितने ही शराबी, बदचलन और अन्य मन्दे कर्म्म करने वालों के घरों में भी मैं ने ऐसे ही बच्चे देखे हैं, जो बेशक बढ़ी उमर तक जीते रहे, परन्तु वह महा अबोधी और बेहोश ही रहे। बहुत से लेखकों और वैज्ञानिकों ने जो घटनाएं एकत्र की है, उनके आधार पर वह इस नतीजे पर पहुंचे हैं, कि प्रत्येक माता पिता और अन्य पूर्व्वजों का यह बहुत बड़ा कर्तव्य है, कि वह सब प्रकार के नशों से परहेज़गार हों, सब प्रकार के व्यभिचार और अप्राकृतिक कर्म्मों से बचे हुए हों, और स्वार्थपर्ता के भयानक रोग न हों, हिंसा भाव से बचे हुए हों, आदि। अन्यथा उनके ख़ानदान में एक या दो या सारे बच्चे ही ऐसी प्रकृति लेकर पैदा होंगे, जो साधारण मनुष्यों की दुनिया में प्रवेश न कर सकेंगे।

मैं कई ऐसे ख़ानदानों में गया हूं, जहां मुझे दुख के साथ यह देखना पड़ा है, कि उन ख़ानदानों के बच्चों को आप कोई भली और श्रेष्ट प्रेरणा नहीं कर सकते, वह प्रत्येक नेक काम और परोपकार के कार्य्य को एक बेवकूफ़ी या महा मूर्खता और ख़बत की वस्तु समझते हैं। एक एक जन ने जब रिश्वत लेनी छोड़ दी है, तब उसके

घर वालों, बिरादरी वालों और दोस्तों की तरफ़ से हर्ष का प्रकाश नहीं किया गया, उलटा तकलीफ़ का प्रकाश किया गया, फिटकार डाली और लान-तान की गई। दयानतदारी के काम पर फिटकार डालने वाले ऐसे सैंकड़ों जन अपनी प्रकृति के विचार से पुकार-पुकार कर कह रहे हैं, कि हमें नेक ज़िन्दगी नहीं चाहिए। ऐसे जनों को अत्यन्त घटिया दर्जे की आत्मिक पूंजी मिली है और इसलिए वह उच्च जीवन के मार्ग पर जाने के पूर्णतः अयोग्य हैं, या होते जो रहे हैं। ऐसे जनों पर अनुकूल हालात का भी अधिक कार्य्य नहीं होता, और सब से बड़ा ख़तरा जो उनके जीवन में पैदा हो जाता है, वह यह कि वह प्रतिकूल हालात में जाने के लिए हर समय तैयार रहते हैं।

एक ही प्रकार के हालात सब मनुष्यों पर एक ही प्रकार के असर नहीं डालते, जो हालात एक मनुष्य को ऊपर ले जाते हैं, वही हालात दूसरे के लिए प्रतिकूल वा हारिकारक प्रमाणित होते हैं। एक बार एक जन भगवान देवात्मा के देव प्रभाव दायक मंडल में आकर बैठा, कुछ दिनों के बाद उस ने संगत में आना छोड़ दिया, मैंने उसके हालात जानने के लिए एक जन को उसके पास भेजा, उस ने पूछने पर जो उत्तर दिया, वह हैरानी में डालने वाला था। उस ने बताया, कि जब सभा परिचालक अपने बयान से उच्च प्रभावों की जीवन दायक लहरें पैदा कर देते है और सारा मंडल उच्च प्रभावों से भर जाता है, तब मैं ऐसा अनुभव करता हूं, कि मेरा गला घुटता है और मेरा वहां से भागने को दिल करता है। मेरे लिए यह एक अध्ययन की वस्तु थी, कि उच्च प्रभावों का मण्डल भी एक एक मनुष्य को बुरा लगता है। अब ऐसे जन का इस लोक वा परलोक में क्या भला हो सकता है।

इसके भिन्न अनुकूल हालात प्रत्येक मनुष्य पर एक जैसा असर नहीं डालते। एक ही क्लास के सब लड़के एक ही अध्यापक के चरणों में बैठकर उन्नति नहीं करते। इसी प्रकार देव समाज के पवित्र मंडल में आकर भी कोई जीवन के विचार से सारी उमर ही पहली श्रेणी में रहता है, कोई दूसरी श्रेणी में रहता हैं और कोई 2 माई का लाल यहां तक उन्नति कर जाता है, कि अपनी कुल आत्मिक पूंजी और अन्य शक्तियां भगवान् देवात्मा के अद्वितीय कार्य्य में लगाना चाहता है। इस का असल कारण यह है, कि उन जनों में मुख्यता आत्मिक पूंजी का अन्तर है। जिन की आत्मिक पूंजी कुछ उच्च कोटी की है, वह अनुकूल हालात पाकर अपनी निम्न प्रकृति पर जय लाभ करते हैं और जीवन की उच्च मंज़िलों में उन्नति कर जाते है, परन्तु जिन की मोह ग्रस्त नीच प्रकृति उन की अच्छी पूंजी पर जय लाभ करती है वह भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में श्रद्धा भाव रखकर और कई बार उत्साहित होकर भी मोह के भारी 2 पत्थरों को उठा फैंकने के अयोग्य होने के कारण भवसागर में डूबते ही जाते हैं। कैसा हृदय विदारक दृश्य!! जन्मजात योग्यता का मनुष्य की तकदीर या भाग्य का फैसला करने में बढ़ा भारी हाथ है। किसी मनुष्य को जो आत्मिक पूंजी मिलती है वह एक ही बार मिलती है और वह फिर नहीं मिल सकती। परन्तु मूर्ख मनुष्य अपने पूर्व्वजों से अच्छी आत्मिक पूंजी पाकर भी जब उस को लुटाने लगता है, तब दुखी नहीं होता।

साधारण मनुष्य तो नीच प्रकृति की पूंजी लेकर उत्पन्न होते हैं। उन में से करोड़ों ऐसी प्रकृति लेकर उत्पन्न होते हैं, कि वह धर्म्म मार्ग पर चलने के योग्य ही नहीं होते। कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, कि जो थोड़ी सी श्रेष्ट पूंजी लाते हैं, और

वह भले मनुष्य कहलाते हैं, परन्तु वह भी धर्म्म जीवन से वंचित रहते हैं। बहुत थोड़े जन अपेक्षाकृत ऐसी श्रेष्ट पूंजी लेकर उत्पन्न होते हैं, कि जिन को यदि अनुकूल हालात मिलें, तो वह धर्म्म मार्ग के मुसाफ़िर बन सकते हैं, परन्तु अनुकूल हालात न पाने के कारण वह भी नष्ट हो रहे हैं। गिनती के सात्विक भाव पाए हुए जन अपने साथी मनुष्यों की एक वा दूसरी सेवा में लगते हैं, और यह सेवा साधारणत: शारीरिक और मान्सिक होती है, अर्थात मनुष्य के शारीरिक दुखों को कम करने और मूर्खता को दूर करने वाली होती है। इन कुल मनुष्यों की पूंजी उन्हें सत्य और हित की ओर नहीं ले जाती और उन में से कोई जन भी यह योग्यता नहीं रखता, कि शारीरिक और मान्सिक दुनिया से ऊपर सत्य और शुभ को मुख्य रखकर सारी आयु उनकी खोजना मे लगा रहे, और सत्य और शुभ के फूलों की सुगन्धी से मनुष्य मात्र को नई जान, नया प्राण और नया उत्साह प्रदान करे। जब कुल मनुष्य मात्र का ही यह हाल था, तब आत्मिक जगत् मनुष्य की आंखों से छुपा रहा, और उसके दुखों का पलड़ा भारी ही होता गया और मनुष्य बिचारा उन के नीचे दब कर अपनी दर्द भरी पुकार से वायुमंडल को हिलाता गया। करोड़ों जनों की इस प्रकार से नेचर में हलचल पैदा करदी, और अन्त में नेचर ने मनुष्य मात्र का अपने ही उत्पन्न किए हुए दुखों से निकाल कर उच्च सुखों और असीम उच्च बरकतों से माला माल करने के लिए आत्मिक जगत् के सूर्य्य भगवान् देवात्मा को आविर्भूत किया और वह ऐसी देव प्रकृति लेकर उत्पन्न हुए, कि उन की उसी देव प्रकृति से उत्पन्न देव ज्योति ने उन की रहनुमाई करनी आरम्भ की।

भगवान् देवात्मा की देव प्रकृति अद्वितीय है। उस देव प्रकृति ने उन को इस योग्य बनाया, कि जिन अच्छे हालात को पाकर करोड़ों मनुष्य अपना विकास न कर सके, उन्हीं हालात में भगवान् देवात्मा अपने देव भावों में विकसित होते गए। अपनी जन्म भूमि में विद्या प्राप्त करने के पश्चात पूजनीय भगवान् अपने अन्य नगर वासियों की न्याई रहकर क्यों तृप्ति न पा सके, अपनी विद्या समाप्त करने पर उन्हों ने नौकरी क्यों न करली? इसका उत्तर यह, कि उनकी देव प्रकृति ने उनके भीतर विद्या के लिए आश्चर्य्य भूख पैदा करदी। उनका विद्या अनुराग अपनी तृप्ति स्वयं ढूंडता था, इसलिए जब उन के कान में यह शब्द पड़े, कि रुड़की कालेज में विद्या पाने का अवसर है, तब बिना किसी को प्रेरणा के, उलटा माता पिता की विरोधिता के होने पर भी भगवान् देवात्मा रुड़की जा पहुंचे। उन से पहले उनके नगर में से कोई भी रुड़की में पढ़ने के लिए नहीं गया था। उनके बाद भी वर्षो तक कोई नहीं गया। तब किस ने पूजनीय भगवान् की रहबरी की? यही मानना पड़ता है, कि उन की देव प्रकृति ने। उनका विद्या अनुराग केवल कालेज तक ही बन्द नहीं रहा, किन्तु दिनों दिन बढ़ता ही गया और उस ने उनके सत्य अनुराग के हाथों में आकर भगवान् देवात्मा को अतुल्य विचारशील और तत्व ज्ञानी बना दिया। फिर उनकी देव प्रकृति ने ही उन्हें एक विशेष परुष अर्थात् एक ऋषि की ओर आकृष्ट किया। वह ऋषि रुड़की में रहते थे। सैंकड़ों मनुष्य उन से मिलते जुलते थे, परन्तु किसी ने उन को गुरू ग्रहण नहीं किया। निम्न प्रकृति रखने वाले मनुष्य उन की विशेषता नहीं देख सकते थे, इसलिए न देख सके। परन्तु भगवान् देवात्मा की देव प्रकृति ने उन्हें अपने गुरू के भीतर की वह खूबियां दिखाई, कि भगवान् देवात्मा को उन्हें गुरू ग्रहण करने की आवश्यकता बोध हुई।

उन की देव प्रकृति ने ही उस विशेष पुरुष के सम्बन्ध में उनके भीतर विशेष गुरू प्रेम उत्पन्न किया, और धन की और अगामी काल की कई प्रकार की उमीदों की कुर्बानियां कराई। दुनिया के कुल लक्ष्य भगवान् देवात्मा की आंखों से गिर गए। उन के सामने आत्म हित की नई दुनिया खुल गई और आत्म हित की तुलना में दुनियां का बाक़ी कोई भी लाभ ठहर न सका। फिर उसी देव प्रकृति ने ही गुरू के देहान्त के बाद वही रुड़की सुनसान करदी, कि जो उन के लिए आकर्षण की वस्तु थी। गुरू न रहे, तो रुड़की का आकर्षण भी न रहा और वह लाहौर गवर्नमेंट हाई स्कूल में तशरीफ़ ले आए।

यहां पर भी एक विचित्र लीला आरम्भ हो गई। एक भले पुरुष के घर पर कुछ विद्वान लोग एकत्र होते थे, और वह धर्म्म सम्बन्धी कई बातों पर आलोचना करते थे। भगवान् देवात्मा की देव प्रकृति ने ऐसे कई विषयों पर सोच विचार करने का अवसर लाभ किया। आश्चर्य जनक बात यह हुई, कि जहां बाक़ी सब जन केवल आलोचना की दुनिया में ही रहे, वहां भगवान् देवात्मा के भीतर सत्य को खोजने का अनुराग पैदा हो गया। इस सत्य की खोजना ने उन की विचित्र विचार शक्ति को हाथ में लेकर उन्हें एक निराली खोजना में डाल दिया और वह थोड़े काल में ही एक चोटी के विचारशील लीडर बन गए। आत्म हित का प्रबल अनुराग उन में पहले उत्पन्न हो चुका था, और यहां आकर हित और सत्य विषयक कई अनुरागों को विकसित होने का अवसर मिला। भगवान् देवात्मा ने अपने देव अनुरागों के द्वारा एक अनोखी दुनिया में प्रवेश करके यह अनुभव किया, कि कुल मनुष्य मात्र इस निराली दुनिया से वंचित है। इस अनोखी दुनिया का निवास भगवान् देवात्मा शुरू 2 में ईश्वर वा परमात्मा की अपार करुणा का फल अनुभव करते थे, परन्तु बाद में ईश्वर के मिथ्या विश्वास की हक़ीक़त खुल जाने पर और नेचर के अटल नियमों और अपनी अद्वितीय देव शक्तियों का ज्ञान और बोध हो जाने पर वह उक्त अनोखी दुनिया के इतने अनुरागी बन गए, कि हर प्रकार की मिथ्या और अशुभ को नष्ट करना और एक मात्र सत्य और शुभ का राज्य स्थापन करना ही उन के जीवन का मुख्य लक्ष्य बन गया। उन के बाक़ी साथियों का यह लक्ष्य क्यों न बना? इसलिए कि भगवान् देवात्मा की देव प्रकृति बिलकुल अनोखी थी और अनोखी है। इसी देव प्रकृति ने भगवान् देवात्मा को अपना महा कठिन और अनोखा जीवन ब्रत ग्रहण करने के लिए मजबूर किया। बाक़ी मनुष्य ऐसा अनोखा जीवन ब्रत क्यों न ग्रहण कर सके? वह भगवान् देवात्मा को देखकर भी अब क्यों नहीं ग्रहण कर लेते? यह सब इसलिए, कि देव प्रकृति से ख़ाली मनुष्य केवल नीच अनुरागों और नीच घृणाओं की दुनिया मे ही पड़ा रह सकता है। सात्विक प्रकृति लेकर भी दुनिया के एक वा दूसरी प्रकार के बन्धनों से आज़ाद नहीं होता। इस अनोखी देव प्रकृति ने भगवान् देवात्मा को आख़री दम तक सत्य की खोजना में प्रवृत रखा। ईश्वर का भ्रम जगत् व्यापी भ्रम है, उसे भी उन्हों ने अपनी विलक्षण ज्योति में एक भयानक और हानिकारक भ्रम के रूप में देख लिया, और अनोखी दलेरी से इस महा भयानक भ्रम को उठा फैंका और उसके आधार पर लिखी हुई हज़ारों पुस्तकें अग्नि की भेंट करदीं। मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में विज्ञान-मूलक तत्व शिक्षा की वह अनोखी और अद्वितीय धर्म शिक्षा प्रदान की, कि जो मनुष्य मात्र से छिपी हुई थी

भगवान देवात्मा का रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध

मुझे इस विचार से अपने सौभाग्य की कोई सीमा बोध नहीं होती, कि मैं घोर आत्म अन्धकार में ठोकरें खाता हुआ अपने बहुत बड़े हितकारी भाई (श्रीमान् देवत्व सिंह जी) के द्वारा आत्मिक जगत् के देव सूर्य भगवान् देवात्मा की शरण में आ गया, और उनका सेवक और देव समाज का सभासद बन कर और इन्हीं हितकारी भाई के नाना प्रकार के अनथक संग्रामों के द्वारा वर्षो तक भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाते रहकर एक ओर रक्षाकारी और जीवन दायक देव प्रभावों की कीमत और ज़रूरत को अपने और दूसरों के लिए एक हद तक बोध करने लग गया, और दूसरी ओर देव प्रभावों को उनके दाता से प्रति दिन योग करके और कभी कभी उनके ही उत्पन्न किए हुए देव प्रभाव दायक मंडल में पहुंचकर भी पाने का आकांक्षी और अभ्यासी बन गया और भगवान् देवात्मा की देव ज्योति में यह सत्य भी देखने लग गया, कि जीवन नाशक प्रभावों में रहकर और उन्हें ग्रहण करके प्रत्येक मनुष्यात्मा की मृत्यु है, और रक्षाकारी और जीवन दायक देव प्रभावों के मंडल में रहकर और उन्हें ग्रहण करके आत्मा की उस की योग्यता के अनुसार रक्षा और उन्नति होती है। इसलिए क्या मेरे लिए और क्या अन्य प्रत्येक अधिकारी मनुष्यात्मा के लिए भगवान् देवात्मा का सम्बन्ध रक्षाकारी और जीवन दायक सम्बन्ध है।

आज प्रातः काल निज का धर्म साधन करते समय जब मैंने पूजनीय भगवान् की निम्न लिखित देव वाणी का पाठ किया:-

देवात्मा की देव वाणी

"परिवर्तन विषयक अटल नियम वा शक्ति के कार्य से प्रत्येक जीवित और अजीवित अस्तित्व से असंख्य अदृश्य कणे निकल निकल कर धूएं की न्यांई चारों ओर आकाश में फैलते रहते हैं, और वह अपनी भली वा बुरी अवस्था के अनुसार उन सब अस्तित्वों को कि जो उन्हें खैंचने और ग्रहण करने की योग्यता रखते हैं, भले वा बुरे रूप में बदलते रहते हैं। अर्थात् उन्हें अपने भले वा बुरे प्रभावों के द्वारा अपेक्षाकृत भला वा बुरा बनाते रहते हैं, इसीलिए औरों के दूर वा निकट के प्रभावों को भी अज्ञात रूप से ग्रहण करके नाना प्रकार के मनुष्य अपनी अवस्था के अनुसार अपने भीतर श्रेष्ट वा अश्रेष्ट, भला वा बुरा, हितकर वा हानिकारक, सुख दायक वा कष्ट दायक परिवर्तन लाभ करते हैं।

इस अमूल्य तत्व को जानकर प्रत्येक ऐसे जन के लिए, कि जिस के भीतर अपने अस्तित्व की बुरे वा हानिकारक प्रभावों से रक्षा करने और प्रभावों के लाभ करने की कुछ भी आकांक्षा जाग्रत हो चुकी हो, नितान्त आवश्यक है, कि वह एक ओर, जहां तक सम्भव हो, ऐसे सब प्रकार के अजीवित और जीवित अस्तित्वों के नीच गति दायक वा बुरे वा हारिकारक प्रभावों से किसी उचित और सच्ची विधि के द्वारा अपनी रक्षा करे, और दूसरी ओर उसे जहां कहीं उच्च गति दायक वा भले और हितकर प्रभाव प्राप्त हो सकते हों, उन के लाभ करने और उन में रहने के लिए सदा चेष्टा करे।

मैंने साफ बोध किया, कि कोई भी जन मनुष्यात्मा होकर एक ओर अपने शारीरिक और अंह सम्बन्धी और अन्य नाना प्रकार के नीच सुख अनुरागों और उन से उत्पन्न नाना प्रकार की नीच घृणाओं का दास होकर और दूसरी और आत्मिक सत्य ज्ञान और उच्च वा धर्म भावों से वंचित रहकर

जहां खुद अपने भीतर से बुरे और महा हानिकारक प्रभावों को चारों ओर फैलाने और दूसरों के बुरे और महा हानिकारक प्रभावों को खैंचने वा ग्रहण करने और अपने भीतर बुरा और हानिकारक परिवर्तन लाभ करने के लिए लाचार है, वहां भले वा हितकर प्रभावों को फैलाने और पाने के भी अयोग्य है। मैंने देखा की सारा मनुष्य जगत् ही आत्मा के रूप और उसके जीवन के विषय में नाना तत्वों वा सत्यों, जीवन नाशक और जीवन दायक प्रभावों अथवा ध्वंसकारी और विकासकारी प्रभावों, आत्म घातक गतियों और जीवन रक्षक और जीवन विकासक गतियों के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने के विचार से आत्म तिमिर नाशक और आत्म रूप प्रकाशक देव ज्योति और उपरोक्त अन्धता और अबोधता की अत्यन्त कृपा पात्र अवस्था के लिए उच्च घृणा और उच्च दुख और उच्च भाव वा उच्च राग उत्पादक देव तेज से वंचित है, इसलिए मनुष्य का क्या अपने जगत् के नाना मनुष्यों के साथ और क्या नीचे के जगतों के नाना अस्तित्वों के साथ जैसा कुछ महा हानिकारक, महा दुखदाई और मृत्यु दायक सम्बन्ध बना हुआ है, उसका भयंकर दृश्य घर घर, नगर नगर और शहर शहर देखने में आ रहा है। मनुष्यों के पास धन की कमी नहीं, कला कौशल की कमी नहीं, कितने देशों को अपना राज्य भी प्राप्त है, प्रत्येक देश में धर्म्म के नाम से कहलाने वाले मज़हबों की भी भरमार है, मन्दिर हैं, मस्जदें और गिरजे हैं, गुरूद्वारे और ठाकरद्वारे आदि भी जगह जगह न केवल मामूली क़ीमत के, किन्तु कई एक लाखों और करोड़ों की क़ीमत के बने हुए हैं, उन में धर्म के नाम से प्रति दिन पूजा पाठ और कथा कीर्तन, सन्ध्या और नमाज़ की भरमार पाई जाती है, उस के लिए त्याग और समर्पण भी बहुत किया जा रहा है, परन्तु शोक और महा शोक! कि नीच सुख अनुराग और नीच घृणा शक्तियों के दासत्व और उपरोक्त दोनों प्रकार की शक्तियों अर्थात् अति विलक्षण देव ज्योति और महा बली देव तेज के अभाव के कारण न केवल धर्म जगत् में किसी का प्रवेश ही नहीं हुआ है, किन्तु परस्पर की हानि करते जाकर मृत्यु के राही बने हुए है, और भीतर की भुतनी शक्तियों के द्वारा ज़िन्दा जहन्नुम फैला रहे है। यदि कुछ विरले मनुष्य किसी भले भाव से किसी सम्बन्ध में हितकर गति करके कुछ सेवाकारी वा सुखदाई बनते भी है, तो अन्य नाना अङ्गों में हानि, दुख और बरबादी अधिक लाने का हेतु बन रहे हैं। मनुष्यों की बरबादी के उपरोक्त कारणों को दूर करने और आत्म तिमर नाशक और आत्म रूप प्रकाशक देव ज्योति और उच्च घृणा और उच्च राग उत्पादक देव तेज का दान देकर उस कुल नारकिय लीला को नष्ट करने और इस पृथिवी को नया और श्रेष्ट रूप देने के लिए देव सूर्य भगवान् देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव हुआ है, और उन्हों ने ही अपनी अलौकिक देव शक्तियों अर्थात् सत्य और शुभ के प्रति पूर्णाङ्ग अनुराग और मिथ्या और अशुभ के प्रति पूर्णाङ्ग देव घृणा शक्तियों में विकसित होकर कुल जगत् के उद्धार और सर्व्वोच्य कल्याण का बीड़ा उठाया है, और अपने जीवन दायक और उच्च परिवर्तन कारी देव प्रभावों को फैलाकर मिथ्या शिक्षा, मिथ्या पूजा पाठ, मिथ्या साधनों, मिथ्या अनुष्ठानों आदि को नष्ट करके सत्य धर्म की नेचर सम्मत शिक्षा देनी आरम्भ की है। और सम्बन्धों से सब प्रकार का दुराचार, पापाचार, अत्याचार और अमिताचार दूर करके उन्हें परस्पर के लिए सेवाकारी, सदाचारी, विश्वास का पात्र, कर्तव्य परायण और शिष्टाचारी बनाना शुरू किया है। भगवान्

देवात्मा के देव प्रभावों ने मुझ महा नीच और अबोधी को अपनी और पर हानि के विषय में नाना अंगों में बोधी बनाकर मेरी रक्षा करनी आरम्भ की है, आत्म हित और परहित आकांक्षी बनाकर और नाना अंगों और सम्बन्धों में हितकर गतियों में लगाकर मेरे जीवन में शुभकर वा हितकर परिवर्तन लाना शुरू किया है। भगवान् देवात्मा मेरे भिन्न अन्य शत शत और सहस्त्र सहस्त्र नर नारियों के जीवन में भी ऐसा महा हितकर परिवर्तन लाने का अनोखा कार्य कर रहे हैं, इसलिए निश्चय एक मात्र भगवान् देवात्मा का सम्बन्ध ही रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध है। क्या मैं ही ऐसा बोध करता हूं? नहीं, और भी कसरत से स्त्री पुरूष जो मुझ से बहुत बेहतर योग्यता रखते है, वह और भी अधिक उज्जवल रूप से देवात्मा के देवरूप और उन के अनोखे और महा बली देव प्रभावों की कीमत और ज़रूरत को बोध करते हैं और देवात्मा के रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध को अपने और अपने सम्बन्धियों के लिए असल ठिकाना, हां, जान और प्राण का सम्बन्धी बोध करते हैं। औरों को छोड़ कर मैं अपने हितकारी भाई विशेष सन्मान् के योग्य श्रीमान् देवत्व सिंह जी की ही हृदय स्पर्शीय कथा उन के अपने शब्दों मे नीचे दर्ज करता हूं, ताकि पाठक गण उस के पाठ से अपना अधिक से अधिक शुभ साधन कर सकें।

श्रीमान् जी लिखते हैं:-

"मैंने मिथ्या और अहित वा पाप मूलक गतियां करने और उन से अपने आत्मा को विकार युक्त बनाने और अपने हित और विकास का मार्ग बन्द करने में कोई कमी नहीं रहने दी, इतनी आत्म घातक और जीवन नाशक गतियां करके भी मैं जो अभी तक धर्म्म के प्राण के विचार से अर्थात् भगवान् देवत्मा की जीवन दायनी ज्योति और शक्ति के प्रभावों की कीमत को उपलब्ध करके उन्हें लाभ करने की आकांक्षा के विचार से जीता जागता दिखाई देता हूं, उस का बहुत बड़ा कारण यह है, कि मेरी उपरोक्त जीवन नाशक गतियों के साथ साथ जीवन दाता भगवान् देवात्मा की ओर से जीवन रक्षक और जीवन संचारक देव प्रभावों के मुझ तक पहुंचाने का संग्राम निरन्तर रूप से जारी रहा है, और जैसे एक एक बच्चे की ओर से अपने शरीर को मैला गन्दा बनाने और रखने के लिए सारा ज़ोर लगाने पर भी उस की माता उसे साफ़ और सुथरा रखने और साफ़ और सुन्दर कपड़े पहनाने का यत्न रखकर उसे सुन्दर और सुसज्जित हालत में रखने में कामयाब देखी जाती है, ठीक वैसे ही मुझे मिथ्या और अहित वा पाप परायण वजूद की भगवान् देवात्मा ने, मेरी ओर से अपने आत्मा के नाश के लिए सिरतोड़ कोशिशें होने पर भी, मेरे आत्मा की न केवल विनाश से रक्षा की है, किन्तु अन्धकार ग्रस्त और उच्च बोध विहीन अवस्था से निकाल कर मुझे अपनी देव ज्योति दान दी है। और कितने ही अङ्गों में मेरे भीतर मेरी रक्षा के लिए अमूल्य और अत्यन्त आवश्यक उच्च बोध पैदा कर दिए हैं, उन मे से कई एक रक्षाकारी बोध ऐसे भी है, कि जिन की सहायता से अब मैं नाना प्रकार की कितनी ही ऐसी विनाशकारी गतियां करने से अपने आप को रोक लेता हूं, कि जिन के विषय में पहले मैं कोई बोध नहीं रखता था, और न ही मैं उन के करने से अपने आप को रोकने की कोई आकांक्षा वा सामर्थ्य रखता था। उन उच्च बोधों का पहले मुझे कोई पता न था, कि मैंने अपने किस सम्बन्ध में क्या क्या नीच गतियां करके अपने किस किस सम्बन्धी और अपने जीवन के किस किस अंग को क्या क्या

हानि पहुंचाई है, इसलिए उस अवस्था में मुझे न कभी अपने उन महा दुष्ट और नारकीय कर्मो के लिए कोई शोक और दुख हुआ था, और न ही कभी उन के परिशोध के लिए आकांक्षा पैदा हुई थी। और इसी लिए उस समय मैंने न कभी अपने विकारों को धोने और मैल से शुद्धि लाभ करने का कोई साधन किया था। अब भगवान् देवात्मा की अपार कृपा और लम्बे काल के घोर संग्रामों से एक ओर उन की अमूल्य, विचित्र और महा हितकर देव ज्योति की किरणें मेरे भीतर प्रवेश करने से मुझे विविध सम्बन्धों में अपनी नाना नीच और महा हानिकारक गतियां निहायत बुरे और घृणित रूप में दिखाई देती हैं और उन्हें देख देख कर मुझे बहुत दुख और शोक होता है और दूसरी ओर उन के देव तेज की मोक्ष दायक किरणों को मुझ तक पंहुचा कर मेरा नाना नीच गतियों से उद्धार करने और उन के विकारों से मुझे शुद्ध बनाने का काम कर रही हैं। मैं साफ़ देखता हूं, कि मैं जिस एक एक चिन्ता वा क्रिया को करके उसे नीच और बुरा देखने की कोई आंख और उस से रुकने की कोई आकांक्षा वा सामर्थ्य नहीं रखता था, और इस लिए खुशी खुशी और चाह कर ऐसी एक एक चिन्ता वा क्रिया में प्रवृत होता था, एक समय आया, कि भगवान देवात्मा की अपार कृपा से मुझे अपनी वह चिन्ता और क्रिया नीच और बुरी बोध होने लगी। ऐसे अद्भुत और मेरे लिए महा हितकर बोध के जाग्रत होने पर मेरे भीतर यह इच्छा पैदा हुई, कि मैं ऐसी चिन्ता वा क्रिया न करूं। परन्तु मुझ से वह चिन्ता वा क्रिया कराने वाली शक्ति की तुलना में मेरी उपरोक्त इच्छा बहुत दुर्बल थी, इसलिए मेरी उस इच्छा शक्ति की कोई पेश नहीं जाती थी, और मैं वैसी ही चिन्ता और क्रिया करने से रुक नही सकता था। मेरी अवस्था सचमुच उस कैदी की न्याई थी, कि जो यद्यपि दिल से यही चाहता है, कि मैं जेलख़ाने में न जाऊं, परन्तु पुलीस के सिपाही उसे घसीट कर जेलख़ाने में पहुंचा ही देते हैं और वह बेचारा विवश उन के हवाले हुआ दुबारा जेलख़ाने में पहुंच ही जाता है। एक काल तक मेरा यही हाल रहा, और मैं न चाहकर भी विनाशकारी गतियाँ करता रहा। मुझे अच्छी तरह याद है, कि एक एक बार मैंने एक एक 2 सम्बन्ध में विनाशकारी गति करके पीछे से उस की उसी प्रकार तकलीफ़ और जलन अनुभव की है, कि जैसे आग में हाथ पड़ जाने से उस की तकलीफ़ और जलन अनुभव होती है। और उस के लिए मैंने अपने आप को बार बार फिटकारा और यही प्रण किया है, कि मैं फिर ऐसा नहीं करूंगा, परन्तु मेरा वह सब रोना धोना और प्रण करना कुछ काम नहीं देता था। नीच गतियां कराने वाली मेरे भीतर की नीच शक्तियां बहुत बढ़ी हुई थीं, मुकाबला करने के लिए भगवान् देवात्मा से बल लाभ करने का मैं कोई ऐसा साधन नहीं करता था, कि जिस से मैं अपनी चिन्ता शक्ति वा शरीरिक अङ्गों पर काबू पाकर उन्हें वह गतियां करने से रोक दूं, बीच बीच में अपने निज के साधनों अथवा सम्मिलित साधनों, विशेष कर व्रतों और उत्सवों के अवसरों पर, भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों की ज़ोरदार रौ के चलने पर जब मेरे भीतर अपनी उपरोक्त नीच गतियों के सम्बन्ध में उच्च जाग्रति पैदा होती, तब मैं उन की महा भयानक छवि को देखकर बहुत दुखी होता, पछताता और ऐसी प्रतिज्ञायें करता, कि आगे को ऐसी महा हानिकारक गतियां कभी नहीं करूंगा। परन्तु जब ही कोई आज़मायश का समय आता, तब ही मैं गिर जाता। अपनी प्रतिज्ञाएं पर स्थिर न रह सकता और वैसी ही

गतियां करने के लिए मजबूर हो जाता। किसी के शरीर में आग से झुलसे जाकर जैसे बहुत से ज़ख़्म हो जाएं और वह ज़ख़्म अभी राज़ी न होने पावें और नए अन्य ज़ख़्म हो जावें, तो उस जन की जैसी कृपा पात्र अवस्था होती है, सचमुच वैसा ही मेरा हाल था। मैं ऐसा अनुभव करता था, जैसे आत्मा के कई ज़ख़्मों में पीप पड़ गई है, और बार बार नीच चिन्ता करने से मेरे उन ज़ख़्मों से पीप बह रही है, परन्तु उन ज़ख़्मों के बहने का क्रम बन्द कर देना मेरी सामर्थ्य में नहीं था, किन्तु उलटा मेरे भीतर ऐसी शक्तियों का प्रबल अधिकार वर्तमान था, कि जो मेरे न चाहने पर भी मुझ से वह गतियां करा लेती थीं, कि जिस से मेरे ज़ख़्मों से पीप बहे, और मेरे ज़ख़्म बढ़ें। ऐसी सूरत में मेरे बचने की कोई सम्भावना न थी, और मैं बिलकुल तबाह हो जाता, यदि भगवान् देवात्मा स्वंय विशेष कृपा करके मुझे न बचाते। मेरे सौभाग्य से अगस्त सन् 1805 ई० से पूजनीय भगवान् ने धर्म विकासालय खोल दिया। भगवान् देवात्मा ने धर्म विकासालय क्या खोला, यह कहना चाहिए, कि मेरे जैसे आत्मिक रोगियों के लिए आत्मिक हस्पताल खोल दिया। धर्म विकासालय की जिन सभाओं में भगवान् देवात्मा की ज्योति और शक्ति विशेष रूप से और नियमित रूप से काम करती थी, उन सभाओं में नियमित रूप से मुझे लगातार वर्षो तक योग देने का महा सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन में योग देकर भगवान् देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज के लगातार कार्य से क्या कुछ आश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन मेरे आत्मा में पैदा हुआ, किस प्रकार वर्षो पहले की मेरी नीच गतियां मेरे सामने आकर मुझे दुखी और बेचैन करने लगीं, किस प्रकार मैं उनका परिशोध करने के लिए मजबूर हुआ, उस के लिए मैंने क्या क्या साधन किए, पूजनीय भगवान् के सम्बन्ध में दूरी का बोध होने पर मैंने उसे दूर करने के लिए क्या क्या यत्न किए, और उन हानि परिशोध सम्बन्धी और श्रद्धा और अनुराग उत्पादक साधनों के चलाने में मुझे क्या क्या दिक्क़तें पेश आई, वह सारा हाल जहां एक ओर बहुत दिलचस्प है, वहां दूसरी ओर वह बहुत शिक्षा प्रद भी है। मैं यह कामना करता हूं, कि मेरे भीतर उच्च परिवर्तन की इस कथा का पाठ मेरे साथी सेवकों और अन्य अधिकारी जनों के लिए लाभ दायक प्रमाणित हो।"

वाह! भगवान् देवात्मा के रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध का कैसा अति विचित्र और महा हितकर कार्य!!

मैंने जितनी बार भी इस हृदय स्पर्शीय कथा का पाठ किया है, (और मैंने इसका अनेक बार पाठ किया है) उतनी बार ही मैंने भगवान् देवात्मा के रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध की विशेषता और परम आवश्यकता को विशेष रूप से बोध किया है, और धर्म के मार्ग में आगे बढ़ने और भगवान् देवात्मा के कार्य में अधिक से अधिक सेवाकारी बनने के लिए विशेष रूप से धक्का लाभ किया है। मेरी यह प्रबल अंकांक्षा है, कि और भी शत शत अधिकारी जन सत्य देव भगवान् देवात्मा के मूल सम्बन्ध की कीमत और ज़रूरत को उपलब्ध कर सकें और उन से जुड़कर अपना परम कल्याण साधन कर सकें।

मेरी यह भी आकांक्षा है, कि आगे को यदि सम्भव हुआ, तो मैं अपने इस हितकारी भाई की उच्च प्रभाव दायक और शिक्षा प्रद जीवन यात्रा की कथा को पाठकों के सामने पेश करके सेवाकारी हो सकूं। काश! मेरे जीवन दाता भगवान् देवात्मा अपने शुभआर्शीवाद से मेरी यह कामना पूर्ण करें।

हितैषी सिंह

भगवान देवात्मा का परमावश्यक और जीवन दायक सम्बन्ध

रेडियो एक हितकर ईजाद है। बच्चा बच्चा उस को जानता है, और उस का लुत्फ़ उठाता है। वह एक सन्दूक की न्यांई होता है, जिस के भीतर कुछ बल्वज़ वर्तमान होते हैं। सन्दूक का सम्बन्ध तार के द्वारा एरियल के साथ होता है जो खुली छत पर व्योम की लहरों को ग्रहण करता है, यह लहरें तार के द्वारा बल्वज़ में पहुंचकर आवाज़ की शकल क़बूल करती हैं, और सैकड़ों और हज़ारों मील की दूरी पर जो गाना हो रहा है, बैंड बज रहा है, ख़बरें भेजी जा रही हैं, या व्याख्यान हो रहा है, वह ज्यों का त्यों श्रोतागणों तक पहुंचता है।

यह बाह्यक रेडियो है। इस के भिन्न मनुष्य के भीतर भी रेडियो है। जिस को अंग्रेज़ी में टेली पैथी (Telepathy) कहते हैं। बेशक इसके कार्य का क्षेत्र हृदय के बल्वज़ (लहरों को रसीव करने वाला आला) की संख्या और गहराई पर निर्भर करता है। जिस जिस प्रकार के बल्वज़ वर्तमान होते हैं, वह अपना अपना काम करते हैं। हृदय का रेडियो भी बाहर के सामानों से हमदर्दी वा दया के सूत्रों से एरियल के साथ जुड़ा होता है। जिस से बाहर की लहरें उसके द्वारा हृदय के बल्वज़ तक पहुंच सकती हैं। दृष्टान्त रूप में महात्मा बुद्ध के भीतर शारीरिक दुख की लहरों को ग्रहण करने का आश्चर्य जनक बल्व वर्तमान था। दुनिया में जो चारों ओर दुख, कष्ट और हाय पुकार की दर्दनाक लहरें दिलों को तड़पा रही वा दुखी और बेचैन कर रही हैं, वह उन के हमदर्दी वा दया के बल्व पर ज़ोर से टकराती थीं, और उनके हृदय में आन्दोलन उत्पन्न करती थीं। बोधी जनों ने उन के हृदय के लक्षणों को देखकर उनके पिता माता आदि संरक्षकों को परामर्श दिया, कि इन के इर्द गिर्द राग रंग, खेल तमाशा और खाने पीने और अन्य सुखों के सम्भोग करने और दिल को बहलाने के सामानों की भरमार की जाए, जिस का प्रबन्ध कर दिया गया। थोड़े काल के लिए इस से कामयाबी भी हुई, परन्तु जब ही महात्मा बुद्ध ने एक बीमार, बूढ़े और मुर्दा को देखने का अवसर पाया, तब ही उन के दुख की लहरें इतने जोर से उनके हृदय के बल्व से टकरांई, कि सारे रंग राग और खेल तमाशे या मौज बहार के सामान फीके पड़ गए, और दिल इस क़दर दुख से भर गया, कि खूबसूरत पत्नी और प्यारे बच्चे को सोए हुए छोड़कर, राज पाट त्यागकर और महल माड़ी और राज गद्दी के सुखों पर लात मारकर जंगल का रास्ता स्वीकार किया, और अपनी विचार में उपरोक्त दुखों का इलाज ढूंढने के कठिन साधनों को पूरा करते हुए सूख कर कांटा हो गए, एक बार बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़े, परन्तु फिर उठे और खाना छोड़ने में भूल जान कर फिर खाना पीना शुरू, किया और आख़ीर दम तक उसी संग्राम में लगे रहें।

इसी प्रकार एक नवयुवक इंगलैंड में किसी कालेज में विद्या लाभ कर रहा था, अपने भीतर कोढ़ियों के दुख की लहरों को ग्रहण करने के योग्य होकर बेचैन हो गया। जब उसे मालूम हुआ, कि अमरीका में कोढ़ियो को अपने घरों और शहरों से अलग करके एक जज़ीरा में आबाद करने का फ़ैसला हो चुका है, तब बेचारे कोढ़ के रोग से रोगी अपनी दुखिया अवस्था से लाचार और अपने सम्बन्धियों की सेवा से वंचित होकर जिस भयानक दुख में से गुज़र रहे थे, उस की दर्दनाक लहरें उस नवयुवक के अधिकारी हृदय पर ज़ोर से चोट लगाकर उस को आन्दोलित करती थीं। उसके दिल में बार बार प्रश्न उठता था, इन बेचारे दुखिया और मुहताज कोढ़ियों का कौन? वह किस प्रकार अपनी

अति दुख और मुसीबत की ज़िन्दगी व्यतीत करेंगे? कौन उन का पुरसांहाल होगा? आदि आदि। जब उस का दुख बढ़ते बढ़ते असह्य हो गया, तब उस ने अपने आपको भेंट देने का फ़ैसला किया। घर वालों, रिश्तेदारो और मित्रों ने उस का पता मिलने पर सख़्त विरोधिता की, प्यार से, दलासे से, धमका कर और डराकर उसे अपने इरादे से रोकने की पूरी कोशिशें की, परन्तु उस नेक और दयावान दिल ने अपने प्रबल दया भाव से लाचार होकर अपनी सारी आयु कोढ़ियों की सेवा में व्यतीत करने के लिए भेंट कर दी। कोढ़ियो के बीच में रहते हुए और उन की सेवा करते करते जब उस पर भी कोढ़ का हमला हुआ, और बीमारी के आसार नमूदार हुए, तब उस के मित्रों ने उसे कुछ समय इन हालात से जुदा होने को कहा, परन्तु उस बहादुर दयावान ने अनुभव किया, कि अब परीक्षा का समय है, इसलिए अब स्थिर रहो, और न केवल बीमारों की सेवा के काम में डटे रहो, किन्तु उसी को करते करते अपने प्राण दो। और उस बहादुर और दयावान ने ऐसा ही करके दिखा दिया।

इन दोनों के दिलों में सात्विक भावों के बल्वज़ दूसरों के शारीरिक दुखों और कष्टों को अनुभव करने के वर्तमान थे, जिन से मजबूर होकर ही वह मनुष्यों की ऐसी सेवा कर पाए। दुखों का इस से ख़ात्मा नहीं होता। शारीरिक दुख भी और बहुत से हैं, परन्तु नीच सुख अनुरागों और नीच घृणा भावों का दास होकर मनुष्य मात्र में ही उन की अन्धता और अबोधता के कारण जो चारों ओर मिथ्या और अशुभ का राज्य फैला हुआ है, नेचर के प्रत्येक विभाग और उस के प्रत्येक सम्बन्ध में अन्याय, असत्य, वा पापाचार और हाहाकार छाया हुआ है। इस कुल दुख और हाहाकार की लहरों को प्रत्येक सम्बन्ध में सात्विक भावों के बल्वज़ रखने वालों के लिए ग्रहण करना असम्भव था। उस के लिए देव बोधों के बल्वज़ का होना आवश्यक था, इसलिए नेचर की विकासकारी शक्तियों ने अपना कार्य करके समय के आने पर देवात्मा को आविर्भूत किया, और उन की हर तरह से रक्षा और उन्नति करके उनके भीतर देव बोधों और देव अनुरागों के अनोखे बल्बज़ उत्पन्न और उन्नत किए, जिन से एक ओर मिथ्या और अशुभ की लहरें उन तक पहुंचकर उनके देव हृदय के भीतर हल चल, बेचैनी और निरन्तर दुख पैदा करने लगीं, और मिथ्या और पाप को नष्ट करने के ज़ोरदार धक्के लगने और उनके मिटाने का कार्य शुरू हुआ, और दूसरी ओर सब प्रकार के सत्य और शुभ की लहरें उन तक पहुंच सत्य और शुभ का राज्य अथवा देव राज्य लाने और इस दुनिया को नया और श्रेष्ठ रूप देने के लिए मजबूर करने लगीं। उनको इसी परम लक्ष्य के लिए मजबूर करने लगीं। उन्होंने इसी परम लक्ष्य की पूर्ति के लिए अपना अद्वितीय जीवन व्रत ग्रहण किया। और उस की सिद्धि के लिए हर प्रकार का पूर्ण त्याग और पूर्ण समर्पण करके अपना सर्वस्व भेंट चढ़ा दिया। उन के देव अनुरागों रूपी बल्वज़ 24 घण्टे अपना कार्य करने लगे। उठते बैठते, खाते पीते, काम काज करते, लेते देते, सोते जागते, हर प्रकार की मिथ्या और अशुभ के नष्ट करने और सत्य और शुभ के लाने का कार्य होने लगा। इस काम में जो कोई विघ्नकारी बना, उसी को त्याग किया। केवल सहायकारी को ही साथी बनाया। ऐसे ही मौका पर किसी ने कहा है, और सच कहा है,

"दोस्तों सम्बन्धियों और, सेवकों को तज दिया;
मान धन आराम सुख, जो कुछ भी था माना हुआ।
साथ मिशन का जो था, उस को ही सिरफ़ रहने दिया;
गरचे उस के हाथ से भी, बारहा दुख ही सहा।"

उन के देव अनुरागों ने उन से इतना काम लिया कि उनका शरीर चूर चूर हो गया, कई रोगों

का घर बन गया, अन्धकार ग्रस्त और पाप परायण विरोधियों, कृतघनों और अबोधी सेवकों से इतने सदमे खाए, कि एक एक समय मृत्यु प्राय: अवस्था मे पहुंच जाते रहे। ऐसे ही समयों के लिखे हुए विलाप नामी लेखों से कुछ उनके दुखों और कष्टों का अनुमान हो सकता है, परन्तु ऐसी हालत में भी उनके भीतर से यही आवाज़ निकली है, कि

"मेरे प्रगट होने का एक विशेष उद्देश्य है, और मेरे जीवन का एक विशेष व्रत है, कि जिस का पूरा होना क्या इस देश के उद्धार और क्या कुल जगत् की आत्मिक भलाई के लिए ज़रूरी है, और वह बिना इस अज़ाब का बोझा उठाने के पूरा नहीं हो सकता।"

"मैं इस पृथिवी में वह दीन वा धर्म लाना चाहता हूं, कि जो इसी दुनिया में सब प्रकार के पापों और बुराइयों का नाश करता हो, जो इसी दुनिया में ऐसे सच्चे और भरोसे के योग्य सम्बन्धी उत्पन्न करता हो, कि जिन के उत्पन्न होने से मनुष्य जीवन सब प्रकार से मीठा और सुख प्रद बन सकता हो। जो इसी जगत् में मनुष्यात्माओं को सत्य मोक्ष देता हो, और उच्च चरित्र के ऐसे दर्जे मे ढालता हो, कि जिस से मनुष्य न केवल किसी अन्य मनुष्य के लिए, किन्तु प्रत्येक ऐसे जीवन धारी के लिए कि जिस से उसका शुभ सम्बन्ध हो, पूर्णत: हितकर सम्बन्धी प्रमाणित हो। यदि इस प्रकार के उच्च जीवन धारी आत्मा विससित हो, और उन के उच्च जीवन के द्वारा इस प्रकार का खमीर उत्पन्न हों, तो उस से जहां मेरा मिशन पूरा होगा, वहां मेरा यह मिशन दुनिया मे अपनी विशेषता भी प्रमाणित करेगा।"

(मुझ में देव जीवन का विकास पृष्ट257)

वाह! हित और सत्य स्वरूप देवात्मा की इस जगत् में देव राज लाने वा स्थापन करने की किस कदर अति श्रेष्ठ और गाढ़ कामना!! और उस के निमित्त कितना त्याग और समर्पण! और मनुष्य मात्र और उस से नीचे के जगतों का कितना महा सौभाग्य!!!

भगवान् देवात्मा ने अपने अनोखे देव प्रभावों के द्वारा अधिकारी जनों को बदल कर एक अतिश्रेष्ठ नवयुग लाना शुरू कर दिया। कसरत से अधिकारी स्त्री पुरूषों के भीतर एक वा दो और कई एक में चार प्रकार के सात्विक भावों के बल्वज़ पैदा हो गए। अर्थात् (1) अटल विश्वास (2) अटल श्रद्धा (3) अटल कृतज्ञता और (4) देव प्रभावों के लिए आकर्षण पैदा हों गया। जिन के द्वारा देवात्मा गुरू से आत्मिक योग करके जहां उनके देव प्रभावों का देव प्रसाद पाने लगे, वहां उस से खुद मालामाल और धन्य धन्य होने के भिन्न अन्य अधिकारी दिलों तक भी पहुंचने के योग्य बन गए। विशेष सम्मान् के योग्य श्रीमान् देवत्व सिंह जी ऐसी सौभाग्यवान अवस्था में पहुच गए थे, कि हर समय देव प्रभावों में रहने और दूसरों को उन की प्रप्ति के साधनों में लगाने का हेतु बने। इसी प्रकार श्रीमान् मोहन देव जी, श्रीमान् पण्डित हरनायण जी अग्निहोत्री, श्रीमान् स्वामी गोबिन्द राम जी आदि देव प्रभावों का जीवन दायक और उच्च परिवर्तनकारी मंडल पैदा कर देते थे। कई एक इस समय ऐसा मंडल पैदा करने का कार्य कर रहे हैं।

तब प्रिय पाठक गण! हम भी अपने परम हितकर्ता मूल सम्बन्धी भगवान् देवात्मा की सच्ची महिमा और अपने और अपने सम्बन्धियों के लिए परम आवश्यकता को अधिक से अधिक अनुभव कर सकें, और उन के सच्चे पुजारी और इन के महान कार्य में अधिक से अधिक सेवा - कारी बनकर अपने अधिकार और जीवन को सफल कर सकें।

एच०वी०सोनपार

भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का मनुष्यात्माओं मे अनुपम कार्य

(1) भगवान् देवात्मा क्योंकि देव शक्तियों से विभूषित पूर्ण गठन प्राप्त देवरूप रखते हैं, और देव जीवनधारी हैं, इसलिए वह मनुष्य मात्र का सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं, अपूर्ण गठन प्राप्त मनुष्यात्मा अपनी इस निम्न प्रकृति के कारण इस योग्य ही नहीं हैं, कि वह भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर भी सर्व्वाङ्गों में विकास लाभ कर सकें। वह अपनी आत्मिक पूंजी की अवस्था के अनुसार अपना विकास साधन कर सकते हैं, उस से अधिक नहीं। फिर भी एक एक अधिकारी आत्मा नाना अङ्गों में भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर उन्नति करता और कर सकता है। क्योंकि भगवान् देवात्मा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं। इसलिए किसी अधिकारी मनुष्य का एक पहलू में और किसी का दूसरे अङ्ग में और किसी का तीसरे अंग में, भला होता है। यही कारण है, कि जब देव प्रभाव दायक मंडल में नाना जन वास करनें का सौभाग्य पाते हैं, तब उन के भाव प्रकाश से यह साफ़ प्रगट होता है, कि सब को एक ही प्रकार का लाभ नहीं हुआ, किसी को काम वासना का अधिकार बुरा नज़र आया, किसी को धन अनुराग की गुलामी बुरी मालूम हुई, किसी को मान बड़ाई का अधिकार बुरा लगा, किसी को स्वार्थ बुरा नज़र आया आदि आदि। अब देव प्रभावों का मंडल तो सब के लिए एक ही था, परन्तु भाव प्रकाश अलग अलग क्यों हो गए? वह इसलिए कि देव प्रभाव तो हमारा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं; यह हमारी आत्मिक पूंजी की कमी है, और हमारे भीतर वह सामर्थ्य नहीं, कि हम सर्व्वाङ्गों में अपना कल्याण साधन कर सकें। मनुष्य अपनी अधूरी प्रकृति से लाचार है, परन्तु वह अपनी अधूरी प्रकृति से भगवान् देवात्मा के कार्य को अधूरा नहीं कर सकता। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का कार्य तो पूर्ण हित साधन करने का कार्य है, इस सत्य को हमें बार बार उपलब्ध करने की आवश्यकता है।

(2) चूंकि भगवान देवात्मा हमारा सर्व्वाङ्ग में हित साधन करने वाले हैं, इस लिए उनके देव प्रभावेां से अधिकारी मनुष्यों में नाना प्रकार का उच्च परिवर्तन नज़र आता है। अब यह नाना अङ्गों में भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का जो विचित्र कार्य है, उन सब में एक बात ज़रूर ऐसी पाई जाती, है जो अत्यन्त विचित्र है, वह बात यह है, कि देव प्रभावों में सांस लेने वाला जन नाना सम्बन्धों में कम हानिकारक और नाना सम्बन्धों मे अधिक से अधिक हितकर बनने के मार्ग पर पड़ जाता हैं। वह अपनत्व से निकल कर कुछ पर की तरफ़ जाना शुरू करता है, यह बुनियादी तबदीली धर्म मार्ग पर चलने के लिए अत्यन्त आवश्यक है, इस बुनियादी तबदीली से ही अधर्म जीवन का क्रम बन्द होना शुरू हो सकता है। और धर्म जीवन का क्रम आरम्भ हो

सकता है। जहां अपनत्व या स्वार्थ है, वहां पाप है। जहां पर है वहां धर्म है। अब इस पर के सम्बन्धों में इस निम्न परिवर्तन से भी मनुष्यात्माओं का नाना अङ्गों में कल्याण साधन होता है। इस पर के पथ पर चलने से मनुष्य शिष्टाचारी हो जाता है। शिष्टाचारी होने से वह अपनी क़ीमत बढ़ा लेता है। वह उठना बैठना जान लेता है। वह बड़ों के सम्बन्ध में चलना सीख जाता है। उनका प्रणाम का तरीक़ा और अन्य वर्ताव दूसरों पर अच्छा असर डालता है, कई जनों का इतने परिवर्तन से ही बहुत बड़ा भला हुआ है। मेरे सामने की घटना है, कि एक भद्र जन एक देव समाज के माननीय जन को मिलने के लिए आया, उस माननीय जन ने अपने स्वभाव से ही जो उस जन का स्वागत किया, उस से उस जन पर इस क़दर गहरा असर हुआ कि वह उस को वर्षो तक न भूल सका। और जगह जगह उस का प्रकाश करके तृप्ति पाता रहा। यह भद्र जन और देव समाज के माननीय जन पहले एक दूसरे से वाक़फ़कार नहीं थे; हुआ केवल इतना कि इस माननीय देवसमाजी ने अपनी कुरसी जो अपेक्षाकृत बेहतर थी ख़ाली करके उस भद्र जन को दे दी और आप दूसरी कुरसी पर बैठ गए। इस प्रकार एक और स्मर्णीय घटना है, वह यह कि एक पुलीस अफ़सर एक देव समाज की संस्था में उस के हैड के पास मिलने के लिए गया, उस हैड का उसके सम्बन्ध में जो शिष्टाचार मूलक वर्ताव था, उसका उस अफ़सर पर इतना गहरा असर हुआ, कि जिस का बयान नहीं हो सकता। इस देव समाजी हैड के लिए उस प्रकार के शिष्टचार का प्रकाश करना बहुत मामूली बात थी। एक अवसर ऐसा आया, कि जब देव समाजी हैड को उस पुलिस अफ़सर ने अपनी जान पर खेल कर उन की मदद की। मेरे पास कई माता पिता आते हैं, और अपनी सन्तान मे शिष्टाचार सम्बन्धी उच्च परिवर्तन को देखकर बार बार यह प्रकाश करते हैं कि देव समाज की संस्थाओं में पशुओं को मनुष्य बनाने का काम किया जाता है।

(3) इस अपनत्व से निकल कर पर के लिए सेवाकारी होने के परिवर्तन से परिवारिक सम्बन्धों में जिस प्रकार की मिठास आ जाती है, उस को भी हमें बार बार समरण करने की आवश्यकता है। इस अंग में देव समाज के भीतर सच्चे मोज़ज़े उत्पन्न होते हैं। यह देव समाज के उच्च मंडल में ही सम्भव था, कि पिता अपने बेटे के चरणों में गिरकर उस से माफ़ी मांगे और अपने पहले किए हुए पाप का परिशोध करे, यह देव समाज के उच्च मंडल मे ही सम्भव था, कि एक सुसर अपनी बहू के चरणों में सिर रख कर रोए और माफ़ी मांगे, और अपने पहले के बुरे वर्तावों का परिशोध करे। यह देव समाज के ही उच्च मंडल में सम्भव था, कि एक लड़का अपने ऐसे पिता के सम्बन्ध में रोए और चिल्लाए, कि जिस ने उस की माता और अपने बच्चों को त्याग दिया था, और उस बच्चे के भीतर यह व्याकुलता पैदा हो, कि चाहे मुझे कितनी भी कुर्बानी करनी पड़े, मुझे बिछड़े हुए पिता को अवश्य अपने परिवार के साथ मिलाना है। और वह उन के लिए कई प्रकार की कुर्बानी करे और उस काम में सफलता

लाभ करे। यह एक ऐसी करामात है, कि जिसके सामने मेरा सिर झुकता है। साधारण बच्चा ऐसे बाप को घृणा कर सकता है, कि जिस ने परिवार को त्याग दिया हो और मुफ़लसी के भंवर में फैंक दिया हो। धन्य हैं भगवान देवात्मा, जो ऐसी करामात उत्पन्न करते हैं। यह समाज के उच्च मंडल ने ही सम्भव कर दिया है, कि एक एक धनाढय पति अपनी ऐसी पत्नी के साथ पूर्णतः हमदर्द और वफ़ादार रहे, कि जो सदा बीमार रहती हो और जिस ने अपने पति के घर को अपने बच्चे से आबाद न किया हो, यह भगवान देवात्मा ने ही सम्भव किया है, कि पत्नियों को छोड़कर पति भी यावत्जीवन अपनी पत्नी के साथ वफ़ादार रहें, और उस के जीते जी दूसरी शादी किसी तरह न करें, चाहे हालात कैसे भी हों। भगवान देवात्मा ने ही तलाक़ की बुरी और महा हानिकारक प्रथा को सदा के लिए परित्यक्त कर दिया है। बाक़ी भगवान् देवात्मा ने ही बच्चों को मां बाप का उपकारी रूप दिखाया है, उन के सद्गुण दिखाए हैं; उन की सेवाओं का सुन्दर रूप दिखाया है, जिस का फल यह हुआ है, कि कई देव समाजी परिवार ग़ैर मामूली मिठास से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। (4) भगवान देवात्मा ने अपने कई तुच्छ सेवकों के भीतर ऐसे सद्गुण पैदा किए हैं, कि जिन के कारण ही उन की धन में उन्नति हुई है। उन की पोज़िशन में उन्नति हुई है। उन की इज्ज़त में उन्नति हुई है, आदि आदि।

स्थूल देह त्यागी सरदार साहिब श्रीमान सावन सिंह जी के जीवन की कथा स्मर्णीय है, एक मामूली पटवारी थे, वह केवल भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से लाभ किए हुए उच्च परिवर्तन के कारण ही असाधारण रूप से क़ीमती वजूद बन गए। पंजाब सूबा के गवर्नर साहिब ने सरदार साहिब के साथ अपना जुदा फ़ोटो क्यों ख़िचवाया, वह इसलिए कि वह उनके उच्च चरित्र से बहुत प्रभावित हुए थे। और उन्हों ने यह लिखा था, कि भारत भर में मुझे ऐसा इमानदार जन नहीं मिला। और जहां जहां भी वह तहसीलदार रहे वहां वहां के रहने वालों ने उन को "फ़रिश्ता तहसीलदार" के नाम से पुकारा। अंग्रेज अफ़सर तो उन पर इतने मोहित थे, कि वह अपनी क़लम से लिख गए हैं, कि सरदार साहिब ने क्या गवर्नमेन्ट और क्या प्रजा दोनों पर बहुत बड़े उपकार किए हैं। और उनका पेन्शन पर जाना क्या गवर्नमेंट और क्या प्रजा दोनों के लिए घाटे की चीज़ है। गवर्नमेंट की तरफ़ से उन्हें जागीर अता की गई। उन को मुरब्बे अता किए गए, दो नम्बरदारियां दी गई। यह सब कुछ देने के बाद भी उन के अफ़सर तृप्त नहीं हुए। वह यही चाहते थे, कि ऐसा फ़रिश्ता बहुत बड़े ईनामों का अधिकारी है।

मेरे परलोक भाई श्रीमान सुगना मलजी कनल के साथ भी भगवान देवात्मा की कृपा से उन के अंग्रेज़ अफसरों ने बहुत अच्छा वर्ताव किया। वह उस समय 34) रुपए माहवार के कल्र्क कोयटा में नियत हुए थे। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से उन में जो शिष्टाचार और सदाचार के भाव पैदा हुए थे, उन की बदौलत उन्हों ने बहुत जल्द उन्नति लाभ की और तीन

वर्ष में ही 34) रूपए से 100) रूपए वेतन पर उन्नत किए गए। और एक सैक्शन के हैड बनाए गए। वह खुद मैट्रिक थे, लेकिन उनके अधीन कई ग्रेजूएट थे। मैंने जब अपना जीवन भगवान देवात्मा के कार्य में अर्पण किया और मैं सिन्ध से पंजाब आ गया, तो उन्हों ने भी छलांग मारी। 200 रुपऐ की नौकरी छोड़कर वह 50) रूपए पर देव समाज में काम करने लिए चले आए। उस के बाद जो स्मर्णीय घटना हुई वह यह है, कि गवर्नमैंट की तरफ़ से एक सूचना प्रकाशित हुई, कि जिस महकमा में श्रीमान सुगना मल जी काम करते थे, उस में काम करने वालों को कुछ ख़ास इनाम मिलेगा, वह इनाम उन दिनों के काम के लिए था, जिन दिनों श्रीमान सुगना मल जी वहां काम करते थे। श्रीमान सुगना मल जी ने अपने बड़े अंग्रेज अफ़सर को दरख़्वास्त की की मैं नौकरी तो छोड़ चुका हूं, लेकिन मैं इनाम का अधिकारी हूं। इस अफ़सर ने श्रीमान सुगना मल जी को प्यार भरा पत्र लिखा, कि मैं तुम्हें इनाम भेज रहा हूं, और यह भी लिखा, कि तुम्हारे लिए यदि सम्भव हो, कि तुम फिर नौकरी पर आ जाओ, तो मैं तुम्हें अच्छी तनख़्वाह दिला दूंगा। उसके अधीन सैंकड़े आदमी काम करते थे, उसका दिल श्रीमान सुगना मल जी की तरफ क्यों आकृष्ट हुआ, इसलिए कि भगवान देवात्मा के देव प्रभावों ने उन के हृदय में जो ख़ास चमकदार भाव उत्पन्न किए थे, उन की खुशबू से उन की क़ीमत बढ़ गई थी।

इस प्रकार श्रीमान बालकृष्ण जी फ़रलिया का दृष्टान्त है, उन के पाए हुए गुणों का उन के अंग्रेज अफ़सरों और उनके साथियों पर इतना असर था, कि सब उन को एक ख़ास हस्ती समझते थे, और बड़े बड़े अंग्रेज़ अफ़सर जिन के साया में और डरते थें, उन के पास श्रीमान फ़रलिया न केवल बेधड़क चले जाते, बन्कि सन्मान पाते। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का कैसा अनोखा और विचित्र कार्य! और हम लोगों पर भगवान देवात्मा का कितना महा उपकार!!

(5) भगवान देवात्मा के देव प्रभाव जो विश्वास का जीवन पैदा कर देते हैं, उस के कारण हमारा बहुत बड़ा भला होता है, लाखों रुपए रखकर एक एक ध नाढय की इतनी क़ीमत नहीं बढ़ती, कि जितनी क़ीमत भगवान देवात्मा के एक एक सेवक की बढ़ जाती है, जब उसका जीवन विश्वास का पात्र बन जाता है। एक एक साधारण जन भगवान देवात्मा के इस दान को पाकर हज़ारों दिलों में जगह लाभ कर लेता है। यह एक विचित्र लीला है। श्रीमान लाला हरीदास जी बी.ए. फ़ीरोज़पुर में देव समाज गर्लज़ हाई स्कूल के हैड मास्टर रहे, यह सच है कि वह बहुत मेहनती थे, लेकिन मेहनती जन दुनिया में और भी बहुत मिलते हैं, यह सच है कि वह यूनिवर्सिटी परीक्षाओं मे अच्छे नतीजे पैदा कर देते रहे, परन्तु इस प्रकार के और भी हैड मास्टर हैं, जो अपने स्कूलों में सौ फ़ी सदी फल पैदा करते हैं, परन्तु श्रीमान हरीदास जी भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से एक ऐसी विशेषता के मालिक हो गए, जो दुनिया में दुर्लभ है। वह लड़कियों और स्त्रियों के सम्बन्ध में बहुत बड़े विश्वास के पात्र बन गए। इसलिए बड़े बड़े फ़ौजी अफ़सर भी अपनी नौजवान कन्याओं को उनके पास सुरक्षित समझकर उनके घुटनों को हाथ लगा कर प्रणाम करते थे।

स्थूल देह त्यागी श्रीमान ख़ान जी इस अङ्ग मे हज़ारों दिलों पर अपना सिक्का जमा गए। वह जिस प्रकार की पवित्रता को लाभ कर चुके थे, उसका ही यह फल है, कि उनकी बरसी हर साल

बाहर के लोग बहुत सन्मान भाव से मनाते रहे, और उन की महिमा गाते नहीं थकते।

(6) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से प्रभावित हो कर कई जन इस योग्य बन गए हैं, कि जो धन के बड़े बड़े त्याग करते हैं। श्रीमान सेठ नानू मल जी ने पूजनीय भगवान के देव प्रभावों से 60000 रुपए का दान किया था, श्रीमान डाक्टर श्री राम जी ने अपने स्वार्थ से निकल कर अपना सारा नक़द रुपया जिस की संख्या हज़ारों तक जाती है, पूरे उत्साह के साथ दान दे दिया और उसके बाद उन के दान का क्रम चला ही चलता है, श्रीमान मेवा सिंह जी ने कि जो देव समाज के कर्म्मचारी हैं, अपनी सारी नक़द पूंजी कि जिस की संख्या हज़ारों तक की थी, बहुत बड़े उत्साह और उच्च भावों के साथ दान कर दी। पिछले साल महोत्सव के अवसर पर भगवान देवात्मा की आने वाली शताब्दी के उपलक्ष्य में कई सेवकों ने आठ साल एक मास की आमदनी प्रति वर्ष देने की प्रतिज्ञा की, जो दृश्य इस स्वार्थ परायण देश के लिए एक असाधारण दृश्य है। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव मनुष्य को पर सेवा में ही सुख पाने वाला बना देते हैं। (यह रकमें आज के समय कई लाखों हैं।)

(7) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में पलकर कई जन अच्छे एडीटर बन गए और कई अच्छे लैक्चरार बन गए। और वह साहित्य के द्वारा बहुत बड़े सेवाकारी बनते रहे हैं और बन रहे हैं। 'सेवक' और 'विज्ञान-मूलक धर्म' को छोड़कर जिन के इंचार्ज देव समाज के कर्मचारी हैं। 'सत्य देव सम्वाद' के असिस्टेन्ट एडीटर श्रीमान कपूरचन्द जी रहे, यह केवल मैट्रिक पास थे। परन्तु भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर वह दिनों दिन लेख लिखने की इस प्रकार की योग्यता पाते गए, जिस से बड़े बड़े बी०ए० और एम०ए० वंचित हैं। श्रीमान कपूर चन्द जी का कैसा सौभाग्य! कर्मचारियों में श्रीमान अमर सिंह

बाकी पृष्ट 2 पर

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

WPP - Regd. Postal No.Pb (0077) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव के कार्यक्रम

परम पू० भगवान देवात्मा संस्थापक देवधर्म का 160 वां वार्षिक शुभ जन्म महोत्सव धर्मशाला 18 डी चण्डीगढ़ में 20 दिसम्बर, 2010 से 23 दिसम्बर, 2010 तक मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर पहुंच कर अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

महोत्सव के कार्यक्रम

सोमवार 20 दिसम्बर, 2010

प्रवेश सभा 4.30 बजे सायं

मंगलवार 21 दिसम्बर 2010

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध

2. **पब्लिक लैक्चर 4.30 बजे**

वक्ता – प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़

बुद्धवार 22 दिसम्बर 2010
(महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि - 6.30 बजे प्रात:

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बंध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता, धन और जन की अपील।

2. **दूसरी सभा 1.30 बजे दोपहर,**

विषय : बच्चों की सभा और संगीत सभा।

3. **पब्लिक लैकचर 4.30 बजे सायं,**

वक्ता – डॉ विनोद जी खेड़ा

4. दीप माला 6.00 बजे सायं

5. आलोचना सम्बन्धी सुझाव
(लिखकर दे सकते हैं)

वीरवार 23 दिसम्बर, 2010

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2. भाव प्रकाश

3. देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट : 1. कृप्या सेवक सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों।

2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तरे अवश्य साथ लाएं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts